30

Q. → अशोक के धम्म से आप क्या समझते हैं? अशोक ने इसके प्रचार के लिए क्या-क्या उपाय किए।

Q → What did ASHOKA mean by ASHOKA'S DHAMMA Discuss the measures that adopted for its Propagation?

Ans → मानव समुदाय के लिए धर्म एक व्यापक अर्थ रखता है। उसके विभिन्न क्रियाकलापों पर किसी धर्म विशेष की स्पष्ट छाप होती है। लेकिन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में मानव कल्याण के नाम पर कुछ ऐसे भी लोग हुए हैं जिन्होंने सभी धर्मों को एक साथ ले चलने का प्रयास किया। इस क्रम में आधुनिक युग में हमारे जेहन में जहां महात्मा गांधी की तस्वीर उभरती है, वहां मध्यकालीन युग में महान मुगल सम्राट अकबर ने अपनी 'दीन-ए-इलाही' का चमत्कार मानव समुदाय को दिखाया था। इसी तरह प्राचीन भारत में महान मौर्य सम्राट अशोक ने धम्म को अपनाया था। जिसकी जानकारी हमें अशोक के अभिलेखों से प्राप्त होती है।

इस धम्म के मूल में कलिंग का युद्ध जिम्मेदार था। अशोक के अभिलेखों से स्पष्ट जानकारी मिलती है कि अपने शासन काल के नवें वर्ष में अशोक ने कलिंग राज्य की स्वतंत्रता समाप्त करने का निश्चय किया था। इस क्रम में हम अशोक के तेरहवें शिलालेख से यह जानकारी प्राप्त करते हैं कि कलिंग उसके साम्राज्य में शामिल कर लिया गया था। लेकिन उसके इस सफल प्रयास के कारण भीषण नरसंहार हुआ जिसका उसके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसके विचार स्वभाव बदल गए उसने साम्राज्यवादी नीतियों को उसने हमेशा के लिए छोड़ दिया। इस क्रम में उसने भेरीघोष की जगह धम्म घोष का प्रचलन कि

According to H.C. Roy choudhary — "We find that the Kalinga war was proved a turning point in the carrer of Ashoka in which the involved a poilicy of Dhammavijaye."

इस तरह अशोक ने धर्म विजय की जो नीति अपनाई वह तत्कालीन सभी धर्मों के प्रति समर्पित था। वह सभी धर्मों से प्रभावित था। जिस धर्म में उसे सिद्धांत अच्छा लगा, उसे उसने चुन लिया। इस क्रम में उसने ऐसे नैतिक सिद्धांतों को प्रचारित किया जिन्हें प्रत्येक जाति, धर्म एवं देश के व्यक्ति मान सकते है। उसने उन तत्वों को अपनाया जिसमें वास्तविक विकास के बीज नीहित है। इस सिलसिले में उसने चुने हुए धार्मिक सिद्धांतों की गणना विभिन्न स्तंभ लेखों में करवाई। उसकी यह गणना संयम, कृतज्ञता, दया, दान जैसे नीति की बातों पर आधारित थी। जिसका लक्ष्य मानव समुदाय की नि:स्वार्थ सेवा करना था।

According to R.K. Mukherjee — "We find that the nature of the Dhamma was not resated with any pardicular religious system but a merit law Independence."

जिस तरह उपनिषद ने कर्मकाण्डों की आवश्यकता पर अधिक बल देने का प्रयास नहीं किया था, उसी तरह अशोक ने अपने धम्म में धार्मिक क्रियाकलापों को नगण्य समझने का प्रयास किया। इसके बदले में उसने चरित्र एवं आचरण की शुद्धता पर जोर देने की बात कही। उसने अपने स्तंभ लेखों में दृढ़ भक्ति और

सत्य पर बल दिया। इसी क्रम में उसने क्रोध, अहंकार आदि बुरी प्रवृत्तियों का दमन करने का प्रयास किया, लेकिन उनके ये उपदेश कोरे सिद्धांतों तक ही सीमित नहीं थे। उसने महात्मा बुद्ध की तरह ही धर्म के व्यवहारिकरण मंत्र थे, जिन्हें उसने अपनाया किया। इस क्रम में उसने सभी सम्प्रदायों के धार्मिक सहिष्णुता की नीति को प्रज्वलित किया। इसके अतिरिक्त उसने साम्राज्यवादी नीति को रोक लगाकर एवं पशुओं का वध बंद करवा कर अहिंसा की नीति को अपनाया किया। वस्तुतः उसके अनोखे धार्मिक विशेषताएं इस विश्व परिधि में मिलनेवाली नहीं थी।

अशोक ने इन लौकिक विशेषताओं से युक्त अपने धर्म को व्यक्तिगत एवं राजनीतिक जीवन तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि विश्व समुदाय को इससे प्रभावित करने की कोशिश की। इस क्रम में उसने धर्म को प्रचारित करने के लिए जिन माध्यमों का सहारा लिया उसकी जानकारी हमें उसके सप्तम अभिलेख से प्राप्त होती है। सप्तम अभिलेख के अनुसार उसने सर्वप्रथम अपनी व्यक्तिगत जीवन को बौद्ध धर्म के अनुरूप ढालने का प्रयास किया। इस प्रयास में उसने जीवन को सर्वसाधारण के सामने रखा। उसने राजकीय रसोई में मांस पकाना निषिद्ध घोषित कर दिया। उसने अपनी शिकार संबंधी यात्राएं बंद कर दी। इन सबके बदले उसने तीर्थ स्थानों की यात्राएं प्रारंभ की। इस व्यक्तिगत उदाहरण के कारण साधारण जनता का झुकाव अनोखे धर्म की ओर हुआ, जो इसकी लोकप्रियता का द्योतक थी।

इस बदलती हुई परिस्थिति में अशोक ने अपने प्रशासन को भी धर्म की ओर मोड़ने का प्रयास किया। उसने अपने धर्म की समुचित प्रगति के लिए साम्राज्य के प्रशासनिक स्थिति में सुधार लाना आवश्यक